I. South – East Asia – Sources of Study & Terminology

II.East India Literary References

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Deptartment of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna

Paper – CC-VI, Sem. – II

विश्व की प्राचीनतम किन्तु विकसित सभ्यताओ में भारतीय सभ्यता का अपना एक विशेष महत्व था । भारतीय संस्कृति का प्रवाह आदिकाल से ही विभिन्न क्षेत्रो में हुआ । भारतीय व्यापारी ब्यापार अथवा स्वर्ण प्राप्ति हेतु अपनी सीमओं से काफी दूर जाकर ऐसे अनेकानेक स्थलों की खोज की जो सभ्यता की दृष्टि से तो काफी पिछड़े थे, किन्तु उनकी भूमि आर्थिक सम्पन्नता से ओत - प्रोत थी । इन्ही अज्ञात स्थलों में दक्षिण पूर्व एशिया के देश सुवर्णभूमि और सुवर्णद्वीप भारतीय ब्यापारियो के ब्यापार स्थल तो बने हीं, बाद में सदियों तक भारतीय संस्कृति के प्रमुख केन्द्र भी रहें ।

सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप का उल्लेख प्राचीन भारतीय साहित्यों के साथ - साथ अन्य विदेशी साहित्यों में हुआ है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोग उन स्थानों से परिचित थे एवं वहाँ उनका आना - जाना लगा रहता था । यद्धपि वैदिक साहित्यों में सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप नामक स्थलों का कोई उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके बाद आने वाले लगभग सभी भारतीय साहित्यों में इस भूमि अथवा इस क्षेत्र के किसी न किसी स्थल की चर्चा स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है ।

प्राचीन भारतीय साहित्यों यथा - संस्कृत, पाली, प्राकृत तथा दक्षिण भारतीय भाषाओं के ग्रन्थों के साथ - साथ विदेशी स्रोतों में तिब्बती, वर्मा, यूनानी, अरबी तथा चीनी ग्रन्थों से भी सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप के स्थलों की चर्चा भारतीय यात्रियों की यात्रा के रूप में विस्तृत जानकारी मिलती है । साहित्यिक स्रोतों के अतिरिक्त पुरातात्विक स्रोतों से भी इन स्थलों की जानकारी प्राप्त होती है । दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न स्थलों का उल्लेख विभिन्न प्रकार के प्राचीन भारतीय साहित्यों में है, जो निम्न प्रकार से है :-

(I) बौद्ध साहित्य - दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में (सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप) का उल्लेख बौद्ध साहित्य के रूप में - जातक, महावंश, दीपवंश, मिलिन्द्पन्हो, निद्देश, विमानवत्यु, महकर्मविभंग, अंगुत्तरनिकाय आदि में किया गया है। विभिन्न प्रकार के जातक ग्रन्थों में इन प्रदेशो का उल्लेख भारतीय ब्यापारियों, विद्वानों, धर्म प्रचारकों आदि के कथा कहानी के रूप में उल्लेख किया गया है। महाजनक जातक में विदेह के शासक अरिट्ठ जनक के विधवा पत्नी और उसे पुत्र के कष्टप्रद यात्रा के द्वारा चम्पा (भागलपुर) से सुवर्णभूमि की यात्रा, शंखपुराण में बनारस से सुवर्णभूमि की यात्रा सुस्सोंदी जातक में भारतीय ब्यापारियो द्वारा बनारस से सुदूरपूर्व तक की ब्यापारिक यात्रा एवं सुप्पारक जातक में मरुकच्छ के पतन ग्राम से सुवर्णभूमि तक जुरमाल सागर, अग्निमाल सागर, दीघमाल सागर, नीलवण्ण सागर, कुशमाल सागर आदि का उल्लेख विस्तृत रूप से किया गया है। जातकों में वर्णित कहानियों से इतना स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय इन स्थानों पे यात्रा करते थे, जो काफी कष्टप्रद थी।

पालि बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपन्हों में भी सुवर्णभूमि की चर्चा है जिसमे अनेक ब्यापारिक केन्द्रों और यहाँ के ब्यापारियों का उल्लेख किया गया है, जिसमें बताया गया है की यहाँ के ब्यापारी जहाज मालिकों से आयत व निर्यात शुल्क लेकर तकोला, चीन एवं सुवर्णभूमि की यात्रा किया करते थे। अन्य दुसरे पालिग्रंथ निद्देश में भी सुवर्णभूमि के साथ- साथ अन्य कई समुद्री देशों का उल्लेख किया गया है। निद्देश में 24 ऐसे स्थानों का उल्लेख किया गया है, जो ब्यापारिक केन्द्र थे जिसमे मुख्यतः तकोला, कालमुख, जावा, तमली, ताम्रपणी, सुप्पार, बंग, गग्गन एवं अन्य केंद्र है तथा 10 ऐसे स्थलों का उल्लेख है जिसकी यात्रा कष्टप्रद थी। उन स्थानों पर विभिन्न मार्गों द्वारा जाया जाता था, जिसमे मुख्यतः अजपथ, मेंडपथ, शंकुपथ, वंसपथ, मुसिकपथ एवं अन्य थे। मिलिन्द्पन्हो में इन स्थानों का भी कुछ इसी प्रकार उल्लेख है। इस प्रकार निद्देश में सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप के काफी विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र का पता चलता है।

इन ग्रंथों के अतिरिक्त सिलोन (लंका) के प्रसिद्द बौद्ध ग्रन्थ, महावंश और दीपवंश में भी सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप के स्थलों का उल्लेख है। मौर्यवंशीय शासक अशोक के समय में दो स्थविर सोज और उत्तर के द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ सुवर्णभूमि की यात्रा किये थे। जिन्होंने वहाँ के निःसंतान रजा को पुत्र का आशीर्वाद दिया था।

(II) संस्कृत साहित्य - सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप के विभिन्न देशों का उल्लेख देशों का उल्लेख संस्कृत साहित्य के रूप में वायु पुराण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, रामायण, महाभारत,

कथा सरित सागर, वृहत्कथा मंजरी, कथाकोष, कौटिल्य अर्थशास्त्र आदि ग्रन्थों में विस्तृत रूप से किया गया है । संस्कृत साहित्य कथा सरित सागर, वृहत्कथा मंजरी एवं कथाकोष के श्लोक में वर्णित कहानियों के द्वारा सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप तक भारतीय लोगों की कष्टप्रद एवं साहित्यिक यात्राओं का वर्णन है जिसके द्वारा भारत से सुवर्णभूमि तथा सुवर्णद्वीप के विभिन्न देशों की भौगोलिक क्षेत्रों, वहाँ की सभ्यता संस्कृति एवं विभिन्न प्रकार के मार्गों की जानकारी दो मित्रों सानुदास एवं आर्चर के यात्राओं के माध्यम से प्राप्त होती है। इस ग्रन्थ में भारत दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के बीच कुछ स्थानों यथा अजपथ, मेंडपथ, शंकुपथ, वंसपथ, मुसिकपथ, छत पथ जो की काफी कठिन मार्ग था की चर्चा की गयी है । कथाकोष नामक ग्रन्थ में नागदत्त नामक ब्यापारी के द्वारा सुवर्णद्वीप के कठिन मार्गों का उल्लेख किया गया है।

दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न देशों का उल्लेख पुराणों में बेहतर तरीके से किया गया है। वायु पुराण में भारत के दक्षिण में स्थित प्रदेश अंग द्वीप, यम द्वीप, मलय द्वीप, शंख द्वीप, कुश द्वीप, वराह द्वीप आदि का उल्लेख किया गया है, जो कीमती पत्थर, सोना और चन्दन के लिये प्रसिद्ध था । वायु पुराण के एक विवरण के अनुसार भारत को नौ भागों में बांटा गया था जो मिलकर एक वृहत भारत की रचना करते थे। इस बृहत् भारत के अन्तगर्त इन्द्रद्वीप़ कशेरुमान, ताम्रपर्णी, गमस्तिमान, नाग द्वीप, सौम्य, कुमारिक, वरुण और गन्धर्व आता था । वर्तमान इतिहासकारों जैसे आर. सी. मजुमदार ने इन्द्र द्वीप की समानता वर्मा से तथा कशेरुमान की समानता, मलय द्वीप से की है । बाद में गरुड पुराण एवं वामन पुराणों में भी इन स्थलों की चर्चा की गई है । संभवतः इन प्रदेशों में भारतीय संस्कृति दृष्टिगोचर होती थी, इसलिए इसे बृहत्तर भारत कहकर संबोधित किया जाता था ।

बाल्मीकि रामायण और महाभारत से भी सुदूर पूर्व के प्रदेशों की जानकारी प्राप्त होती है । रामायण और महाभारत के कालमुख को एक कबीला माना गया है । बाल्मीकि रामायण से सुदूर पूर्व के देशों का भौगोलिक ज्ञान भी प्राप्त होता है। इसमें यवद्वीप को वर्तमान जावा बताया गाया है । इस प्रकार मिलता जुलता नाम हरिवंश पुराण, सेमेंद्रकृत रामायण में भी किया गया है । सुवर्णरुप्यक के स्थान पर इसमें सुवर्णकुड्यक नाम का प्रयोग किया गया है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में सुवर्णकुड्यक का प्रयोग एक देश के रूप में किया गया है जो फुनान (कम्बुज) से लगभग 200 मील पश्चिम में स्थित था । रामायण में वर्णित समुद्रद्वीप की समानता सुमात्रा से की गई है जो कीमती पत्थर, माणिक एवं अनेक रत्नों को धारण करने वाला प्रदेश था

- **निष्कर्ष** - <u>यदि प्रश्न सिर्फ प्राचीन भारतीय साहित्य का स्रोत मांगे तब इसे लिखना है</u>

उपयुक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर हम कह सकते है कि प्राचीन भारतीय साहित्य में दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न देशों का परिचय प्राप्त होता है, जिसे कई साहित्यिक यात्राओ द्वारा बताया गया है । साथ ही इन प्रदेशों में ब्यापारियों, विद्धानो व धर्म प्रचारकों द्वारा भारतीय संस्कृति का विस्तार हुआ जिसे कालक्रम के अनुसार विभिन्न साहित्यों में दर्शाया गया है ताकि इसका ज्ञान भारतीयों के साथ समस्त विश्व का मार्गदर्शन कर सके ।

(III) यूनानी - रोमन लेखकों का विवरण - भारतीय साहित्यों की तरह पाश्चात्य लेखको ने सुवर्णभूमि और सुवर्णद्वीप को अलग - अलग माना है । इन प्रदेशों की चर्चा सबसे पहले एक अज्ञात लेखक द्वारा लिखी गई 'पेरिप्लस आफ द इरिथियन सी' नामक पुस्तक में किया गया है जिसमे ब्यापार के सिलसिले में इन प्रदेशों में जाने के क्रम में लिखी गयी । इस प्रकार विभिन्न लेखकों यथा - डियोनियस, पेरिगेटीस, सेलिनस, मार्टिआनेल, कैपेला आदि के द्वारा दूसरी शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक इन प्रदेशों की महत्ता को उजागर किया गया है । टॉलमी ने सुवर्णभूमि को चिसी - छरसेनियस तथा सुवर्णभूमि को चिसी - छोड़ा कहकर संबोधित किया है ।

(IV) अरबी एवं चीनी विवरण - अरबी एवं चीनी साहित्यों में सुवर्णभूमि और सुवर्णद्वीप के बारे में काफी वर्णन मिलता है । अलबरूनी ने सुवर्णभूमि को जाबाग एवं सुवर्णद्वीप को जाबाज कहा है जिसका समर्थन अनेक अरबी लेखकों ने किया है जिसमे प्रमुखतया हरकी, याकुत, शिराजी आदि है । अन्य अरबी लेखक नुवायरी ने सुमात्रा के पश्चिम भाग को फनसूर या वरोस को सुवर्णभूमि माना है ।

चीनी यात्री इत्सिंग ने सुवर्णभूमि के समानता चे - लि - फो - चेया श्री विजय से की है । अनेक चीनी एवं अरब यात्रियों ने इसके अतिरिक्त नारिकेल द्वीप, कर्पुरद्वीप आदि का उल्लेख भी किया है ।

निष्कर्ष - <u>जब प्रश्न दक्षिण पूर्व एशिया का स्रोत पूछे तब तब इसको लिखना है</u>

इस प्रकार हम कह सकते है कि प्राचीन भारतीयों को दक्षिण पूर्व एशिया के देशों का ज्ञान, उसकी भौगोलिक परिवेश एवं वहाँ तक पहुचने का आसान एवं कठिन दोनों मार्गों की जानकारी प्राप्त थी । भारतीयों को स्वर्णप्राप्ति की लालसा एवं ब्यापार में उच्च मुनाफा ने दक्षिण पूर्व एशिया के देशों ने ध्यान आकृष्ट कराया, जिससे आगे चलकर भारतीय उपनिवेश की स्थापना हुई और भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ जिसका वर्णन न सिर्फ भारतीय साहित्य में वरन् अनेक विदेशी साहित्यों में भी किया गया ।